University in News on 30 January 2024

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि : पोर्टल पर अंक अपलोड न किए तो रुकेगा परिणाम

लखनऊ। लविवि में स्नातक की परीक्षाएं समाप्त हो चुकी हैं और परास्नातक की परीक्षाएं समापन की ओर हैं। ऐसे में संबद्ध जिलों हरदोई, लखीमपुर, रायबरेली, सीतापुर व लखनऊ के सहयुक्त उन कॉलेजों जिन्होंने अब तक विवि के पोर्टल पर प्रैक्टिकल व वाइवा की परीक्षाओं के अंक अपलोड नहीं किए हैं, उनके परीक्षा परिणाम रोके जाएंगे। यह निर्णय विवि के परीक्षा विभाग की ओर से लिया गया है। (संवाद)

लविवि का सर्वे : सात जिलों में 1600 से अधिक जलीय पक्षियों की प्रजातियां मौजूद

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के सात जिलों में जलीय पक्षियों की 1652 प्रजातियां पाई गई हैं। इसमें राजधानी लखनऊ, संतकबीरनगर, कन्नौज सहित अन्य जिले शामिल हैं। पक्षियों की संख्या का यह आंकड़ा बर्ड इंडिया पोर्टल पर भी अपलोड कर दिया गया है।

लखनऊ विश्वविद्यालय में वन्य जीव विज्ञान संस्थान की समन्वयक प्रो. अमिता कनौजिया के निर्देशन में यहां के विद्यार्थियों ने राज्य जैव विविधता बोर्ड और अवध वन विभाग के सहयोग से सात जिलों में किए गए वेटलैंड्स के भ्रमण के बाद तैयार रिपोर्ट तैयार की है। इनमें लुप्तप्राय मिस्र गिद्ध से लेकर गैडवाल बतख (मारेका स्ट्रेपेरा), नादर्न शावेलर (स्पैटुलाक्लाइपीटा) और रेड- क्रेस्टेड पोचार्ड (नेट्टारूफिना) जैसे प्रवासी पक्षी सबसे अधिक संख्या में मिले हैं। उनके मुताबिक एशियाई जल पक्षी जनगणना के लिए सात टीमों को 14 से 21 जनवरी तक इन जिलों के वेटलैंड्स के दौरे के लिए भेजा गया था। (संवाद)

लविवि : 12 विद्यार्थियों को मिली नौकरी

लखनऊ। लविवि में कॉमर्स विभाग के एमबीए फाइनेंस एंड अकाउंटिंग विषय के 12 विद्यार्थियों का सोमवार को कैंपस प्लेसमेंट से चयन हुआ है। सभी को कंपनी 11.25 लाख का वार्षिक पैकेज देगी। निदेशक प्रो. अवधेश मौजूद रहे। विभाग के शिक्षक डॉ. अमित कुमार ने बताया कि चयनित विद्यार्थी यूजे जीवन स्माल फाइनेंस बैंक में एग्जीक्यूटिव ट्रेनी माइक्रोबैंकिंग पद पर सेवा देंगे। (संवाद)

लविवि : इंटर हॉस्टल प्रतियोगिता आज से

लखनऊ। लविवि में इंटर हॉस्टल प्रतियोगिता का आगाज मंगलवार को होगा। इसमें विश्वविद्यालय के सभी 18 छात्रावासों के छात्र-छात्राएं प्रतिभाग करेंगे। प्रतियोगिता का शुभारंभ हबीबुल्ला छात्रावास में कुलपति प्रो. आलोक राय करेंगे। समापन समारोह सात फरवरी को मालवीय हाल में होगा। इंटर हास्टल प्रतियोगिताएं तीन वर्गों में होंगी। (संवाद)

एलयू के 12 छात्रों को मिला कैम्पस प्लेसमेंट

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग की आरे से कैम्पस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन हुआ। जिसमें प्राइवेट बैंक में एग्जीक्यूटिव ट्रेनी-माइक्रोबैंकिंग पद के लिए साक्षात्कार हुए। जिसमें 12 छात्रों का चयन किया गया। प्री-प्लेसमेंट साक्षात्कार में 56 छात्र-छात्राएं शामिल हुए थे। यह ड्राइव एमबीए प्रोग्राम के निदेशक प्रो. अवधेश कुमार और डा. अमित मिश्रा के नेतृत्व में हुआ।

एलयू में सात दिवसीय इंटर हॉस्टल फेस्ट आज से

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में अंतर छात्रावास प्रतियोगिता उत्सव-2024 के आयोजन की तारीख तय हो गई है। हबीबुल्ला छात्रावास में 30 जनवरी से 7 फरवरी तक प्रतियोगिताओं का त्योहार आयोजित किया जाएगा। इस सात दिवसीय साहित्य, सांस्कृतिक व खेलकूद उत्सव का समापन व पुरस्कार वितरण समारोह 7 फरवरी को मालवीय हॉल में होना प्रस्तावित है।

HINDUSTAN PAGE 6

एलयू में हिन्दू अध्ययन केंद्र की स्थापना होगी

तैयारी

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय में आगामी सत्र से हिंदू अध्ययन में परास्नातक की पढ़ाई शुरू होगी। हिंदू अध्ययन केंद्र की स्थापना की जाएगी। साथ ही संस्कृत विभाग के छात्र-छात्राओं को सनातन वैदिक संस्कृति नामक विषय अनिवार्य रूप से पढ़ना होगा। यह जानकारी कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने दी।

एलयू के मंथन कक्ष में कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय व स्वामी करपात्री जी महराज के शिष्य स्वामी अभिषेक ने सोमवार को पत्रकारों से बातचीत में कहा कि स्वामी करपात्री ने वेदार्थ पारिजात नामक एक ग्रंथ की रचना की थी। जिसमें स्वामी जी ने वेदों की भ्रांतियों को दूर कर उसकी प्रमाणिकता को सिद्ध किया। स्वामी अभिषेक ने बताया कि स्वामी करपात्री जी के ग्रंथ में भारत के उत्थान की बातें लिखी गई हैं। उन्होंने कहा कि हम ऐसे देश हैं जो पूरे विश्व के कल्याण की बात करते हैं। स्वामी अभिषेक का कहना है कि वसुधैव कुटुंबकम और वन अर्थ, वन फैमिली की सोच वेदों से ही निकली है।

हिंदू अध्ययन में दो वर्षीय पीजी की पढ़ाई : कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि विवि स्तर पर जल्द से जल्द हिंदू अध्ययन केंद्र की स्थापना का कार्य पूरा कर लिया जाएगा। जिससे आगामी सत्र 2024-25 से पीजी इन हिंदू स्टडीज पाठ्यक्रम की शुरुआत हो सके। कुलपति के अनुसार, हिंदू अध्ययन केंद्र की स्थापना से सनातन संस्कृति और हिंदू धर्म पर ठोस अध्ययन किया जा सकेगा।

सनातन वैदिक संस्कृति का पेपर अनिवार्य

प्रेस वार्ता में कुलपति प्रो. आलोक राय ने कहा कि आगामी सत्र से संस्कृत विभाग के स्नातक व परास्नातक के विद्यार्थियों को सनातन वैदिक संस्कृति विषय अनिवार्य तौर पर पढ़ाया जाएगा। प्रो. राय के मुताबिक, बोर्ड ऑफ स्टडीज, फैकल्टी बोर्ड, विद्या परिषद और कार्य परिषद से जल्द ही इसे पास कर दिया जाएगा।

शोध पीठ की स्थापना का प्रस्ताव शासन को भेजा

कुलपति ने कहा कि एलयू की मंशा है कि हिंदू अध्ययन पर एक शोध पीठ की भी स्थापना की जाए। इसके लिए शासन को प्रस्ताव भेजा जाएगा। जहां से मंजूरी मिलने के बाद एलयू में हिंदू अध्ययन पर पीएचडी भी कराई जा सकेगी।

NBT PAGE 4

LU: नए सत्र से सनातन वैदिक संस्कृति की शिक्षा

आचार्य अभिषेक ब्रम्हाचारी महाराज और वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने हिंदू अध्ययन केंद्र और शोध पीठ शुरू होने की जानकारी दी।

■ एनबीटी संवाददाता, लखनऊ

एलयू में अगले सत्र से हिंदू अध्ययन केंद्र शुरू होगा। इसके माध्यम से यूजी और पीजी दोनों कोर्स में सनातन वैदिक संस्कृति विषय अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाएगा। इसके अलावा एमए इन हिंदू अध्ययन कोर्स भी शुरू होगा। इसके साथ ही हिंदू अध्ययन शोध पीठ भी स्थापित होगी। मंथन हॉल में आचार्य अभिषेक ब्रम्हाचारी महाराज की मौजूदगी में सोमवार को यह जानकारी वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने दी।

वीसी ने बताया कि वाराणसी के आचार्य अभिषेक ने ही विवि में हिंदू अध्ययन केंद्र शुरू करने का प्रस्ताव दिया था। वहीं, आचार्य ने कहा कि युवाओं को वैदिक संस्कृति से जोड़ने के लिए ऐसे केंद्र की काफी जरूरत महसूस की जा रही थी। केंद्र के माध्यम से हिंदू रीति-रिवाज, सनातन परंपरा और वेदों को सरल भाषा में पढ़ने और समझाने का प्रयास किया जाएगा। वीसी ने बताया कि संस्कृत विभाग एवं प्राच्य संस्कृत विभाग के शिक्षकों की मदद से पढ़ाया जाएगा। आगामी सत्र से संस्कृत एवं प्राच्य संस्कृत विभाग के स्टूडेंट्स को सनातन वैदिक संस्कृति विषय अनिवार्य रूप से लेना होगा। इस प्रस्ताव को जल्द ही बोर्ड ऑफ स्टडीज, फैकल्टी वोर्ड, विद्या परिषद और कार्य परिषद से पास करवाया जाएगा।

वीसी ने बताया कि यूजीसी ने हिंदू स्टडीज में नेट की परीक्षा भी शुरू कर दी है। लिहाजा यूजी और पीजी में सनातन वैदिक संस्कृति विषय लेने वाले स्टूडेंट्स को काफी फायदा होगा। इसके साथ ही हिंदू शोध पीठ की स्थापना के लिए जल्द ही राज्य सरकार को प्रस्ताव भेजा जाएगा। इस दौरान युवा चेतना के राष्ट्रीय संयोजक रोहित कुमार सिंह ने कहा की देश का स्वर्णिम समय है हम सबको मिलकर भारतीय संस्कृति और सभ्यता के संवर्द्धन हेतु अपना योगदान देना है। इस मौके पर प्राच्य संस्कृत विभाग के शिक्षक डॉ. श्यामलेश कुमार तिवारी, डॉ. भुवनेश्वरी भारद्वाज, प्रॉक्टर प्रो. राकेश द्विवेदी और प्रवक्ता प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव मौजूद रहे।

i-NEXT PAGE 4

नए शैक्षिक सत्र से लखनऊ यूनिवर्सिटी में शुरू होगा कोर्स

एलयू अब पढ़ाएगा HINDU STUDIES

i SPECIAL

एलयू में सोमवार को वीसी ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दी जानकारी

lucknow@inext.co.in

LUCKNOW (29 JAN): बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी, मुंबई यूनिवर्सिटी समेत देश की अन्य यूनिवर्सिटीज की तर्ज पर अब शहर की लखनऊ यूनिवर्सिटी भी नए शैक्षिक सत्र से एमए इन हिंदू स्टडीज का कोर्स शुरू करेगी. यह कोर्स दो साल का होगा. एलयू के वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए यह जानकारी दी. इस मौके पर धर्म सम्राट करपात्री महाराज के शिष्य आचार्य अभिषेक ब्रम्हाचारी जी महाराज भी शामिल हुए. वीसी प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि स्वामी जी महाराज के प्रस्ताव और उनसे बातचीत के आधार पर एलयू में यह कोर्स चलाने पर सहमति बनी है. उन्होंने बताया कि एलयू एमए इन हिंदू स्टडीज कोर्स के अलावा संस्कृत व प्राच्य संस्कृत विभाग में सनातन वैदिक संस्कृति पेपर को भी जोड़ेगा, जिसमें वेदों के बारे में जानकारी दी जाएगी. यह कंपलसरी पेपर होगा, जिसे अंडर ग्रैजुएट व पोस्ट ग्रैजुएट स्टूडेंट्स के लिए शुरू किया जाएगा. इस कोर्स में स्टूडेंट्स वेद का स्वरूप व प्रमाण, वेदों के बारे में जो भी भ्रांतियां फैली हैं, उन्हें पढ़ेंगे. इस कोर्स का मकसद हिंदू समाज में वेदों को व्यापक स्तर पर प्रचार करना है. इस कोर्स के जरिए स्टूडेंट्स सनातन धर्म को बेहतर समझ पाएंगे व उन्हें अपनी संस्कृति से जुड़ने का एक सुनहरा मौका मिलेगा.

प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए शेयर की जानकारी.

प्रस्ताव था कि यूनिवर्सिटी में जिस प्रकार से अन्य धर्मों के संबंध में अध्ययन कराया जाता है उसी प्रकार से एक हिंदू अध्ययन केंद्र की भी स्थापना की जाए, जिसकी पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर काफी दिनों से प्रयास किये जा रहे हैं और विश्वविद्यालय प्रस्ताव की पूर्ति हेतु अब लगभग तैयार हो चुका है. प्रो. आलोक कुमार राय, एलयू वीसी

"देश में राम युग की शुरुआत हो चुकी है. भारत वेद शास्त्र आधारित देश है. करपात्री जी महाराज ने वेदों को सिद्ध किया है और उसकी प्रमाणिकता को स्थापित किया है. मैंने इस संबंध में कुलपति से अनुरोध किया कि वे एक शोध पीठ की भी स्थापना करने का प्रयास करें, जिसे पाठ्यक्रम में भी शामिल करें. मैं इनको कार्य के सहयोग हेतु साधुवाद देता हूं. आचार्य अभिषेक ब्रम्हाचारी जी महाराज

श्यामलेश कुमार तिवारी का हुआ सम्मान

प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्राच्य संस्कृत विभाग के शिक्षक डॉ. श्यामलेश कुमार तिवारी को माला पहनाकर स्वागत व अभिनंदन किया गया. श्यामलेश तिवारी विगत दिनों अयोध्या में संपन्न हुए प्राण प्रतिष्ठा आयोजन के 9 आचार्यों में से एक थे.

हिंदू अध्ययन केंद्र की भी होगी स्थापना

प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि लखनऊ यूनिवर्सिटी हिंदू अध्ययन केंद्र स्थापित करने जा रही है. इस हिंदू अध्ययन केंद्र के तहत ही एमए इन हिंदू स्टडीज का कोर्स चलाया जाएगा. इसके अलावा, एक शोध पीठ को भी स्थापित करने का प्रस्ताव शासन को देने जा रहे है, इसका प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है. हिंदू अध्ययन शोध पीठ के अलावा एलयू हिंदू अध्ययन में रिसर्च को विस्तार देने पर भी विचार कर रहा है, इसके तहत जेआरएफ को फेलोशिप देने की भी योजना है. यह अगले शैक्षिक सत्र से शुरू हो जाएगा. इस संबंध में समस्त कार्यवाही जैसे सिलेबस, पेपर इत्यादि को बोर्ड आफ स्टाडिज, फैकल्टी बोर्ड व अन्य समितियों से पास कराकर अगले सत्र से शुरूआत करेंगे. नई शिक्षा नीति के तहत आगामी वर्ष में एक वर्ष के पीजी की शुरूआत होने वाली है. इसी तरह 2 वर्ष के पीजी को पुनः रीस्ट्रक्चर किया जा रहा है. इसका लाभ लाइब्रेरी, व अन्य संस्थानों में भी किया जा सकेगा.

AMRIT VICHAR PAGE 4

शुरुआत नए पाठ्यक्रम में सनातन वैदिक संस्कृति का भी होगा प्रश्नपत्र

लविवि के नए सत्र में छात्र पढ़ेंगे एमए हिंदू

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ,

अमृत विचार : लखनऊ विश्वविद्यालय अगले सत्र से सनातन वैदिक संस्कृति को आगे बढ़ाने जा रहा है। विवि के कुलपति का कहना है कि नए सत्र में छात्र एमए हिंदू अध्ययन से शिक्षा ग्रहण करेंगे। पाठ्यक्रम में रिसर्च को भी विस्तार दिया जा रहा है।

लविवि में वार्ता के दौरान आचार्य अभिषेक व विवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय।

लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने बताया कि विवि लखनऊ हिन्दू अध्ययन केंद्र स्थापित करने जा रहा है। इसमें एमए इन हिंदू अध्ययन को शामिल किया गया है। शासन को भेजे गए प्रस्ताव के बाद ये अध्ययन अगले सत्र में आरंभ होगा। पाठ्यक्रम दो वर्षों का होगा। इसमें हिंदू अध्ययन शोध पीठ और रिसर्च को विस्तार दिया जाएगा।

एक धरा एक परिवार पर हो रहा कार्य : लविवि में आए आचार्य अभिषेक ब्रम्हचारी कहते हैं कि भारत वेद शास्त्र आधारित देश है। करपात्री महाराज ने वेदों को सिद्ध करते हुए उसकी प्रमाणिकता को स्थापित किया है। भारत में तेजी से एक धरा एक परिवार पर कार्य किया जा रहा है। हम लोग अखिल ब्रह्मांड की चिंता कर रहे हैं। ऐसे में भारत के हर वर्ग के बच्चे वेद और विचारों से प्रभावित हो रहे हैं। इसी जनाधार को आगे बढ़ाना है।

संस्कृत - प्राच्य में संबंधित विषय होंगे अनिवार्य

कुलपति कहते हैं कि विवि में संस्कृत विभाग - प्राच्य संस्कृत विभाग पहले से हैं। इनमें संबंधित विषयों को अनिवार्य रूप से लागू कराया जाएगा।

फैकल्टी बोर्ड तैयार

नए पाठ्यक्रम में एक पेपर सनातन वैदिक संस्कृति का भी रहेगा। इसमें एक वर्ष का पीजी कोर्स भी शामिल है। इसको लेकर फैकल्टी बोर्ड, समितियां व संसाधन पूरी तरह तैयार कर लिए गए हैं।

आज से शुरू होगी अंतर छात्रावास प्रतियोगिता

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में 9 दिवसीय अंतर छात्रावास प्रतियोगिता की शुरुआत मंगलवार से होगी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि की भूमिका में प्रमुख सचिव पर्यटन मुकेश कुमार मेश्राम रहेंगे। प्रतियोगिता में लविवि के 18 छात्रावासों के छात्र प्रतिभाग करेंगे। लविवि में आयोजित अंतर छात्रावास प्रतियोगिता को लेकर सोमवार को विवि स्थित हबीबुल्ला हॉल में रिहर्सल कार्यक्रम का आयोजन हुआ। विवि प्रवक्ता प्रोफेसर दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि वॉलीबाल प्रतियोगिता सहित अन्य प्रतियोगिताएं शामिल की गई हैं।

गिरमिटिया गीतों में दिखती है भारतीय संस्कृति : प्रो. विमलेश

अमृत विचार, लखनऊ : भाषा, साहित्य और संस्कृति विषयों पर लखनऊ विश्वविद्यालय में व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में भाषाविद प्रोफेसर विमलेश कांति वर्मा रहे। उन्होंने बताया कि गिरमिटिया भारतीयों को आज के प्रवासियों से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। इनमें भाषा - भाषियों के मध्य अंग्रेजी के बाद हिंदी ही संपर्क का साधन है। प्रो. कांति ने प्रवासी साहित्य को एक अलग अनुशासन के रूप में रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि अगर विदेशों एवं गिरमिटिया देशों में हिंदी का विकास करना चाहते हैं तो रामचरितमानस और लोक वार्ता को भाषिक आधार बनाना होगा। इस अवसर पर विभागीय शिक्षकों के अतिरिक्त शोध छात्र उपस्थित रहे।

PIONEER PAGE 3

सनातन पढ़ायेगा लविवि, होगी हिंदू अध्ययन केंद्र की स्थापना

● **सनातन धर्म और हिंदू परंपरा पर शोध करने के लिए विश्वविद्यालय होगी शोधपीठ की स्थापना**

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारत वर्ष में श्री राम युग की शुरूआत हो चुकी है। भारत वेद शास्त्र आधारित देश है। वेदों को प्रमाणित करने का प्रयास किया जाता था किन्तु आज भारत वेदों को सिद्ध कर प्रमाणित कर चुका है। वेदों की प्रमाणिकता क्या है इसे कम समय में नहीं परिभाषित किया जा सकता है। परंतु इसका भावार्थ प्रस्तुत करने का प्रयास हम अपने माध्यम से कर सकते हैं। इसी को समझाने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय अपने यहां पर हिंदू अध्ययन केंद्र की स्थापना करने जा रहा है। जहां पर हिंदू रीति-रिवाज, सनातन परंपरा और उससे जुड़े हुए सभी वेदों ग्रंथ आदि को एक सरल भाषा में पढ़ने और समझने का माध्यम छात्रों को प्रदान किया जाएगा। सोमवार को यह जानकारी लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने एक पत्रकार वार्ता में दी।

प्रोफेसर राय ने कहा कि इस विषय पर एक व्यापक विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया है कि नए अकादमिक सत्र से स्नातक और परा स्नातक स्तर में इसको पढ़ाया जायेगा। जिससे इसकी जानकारी समाज तक पहुँच सके। कुलपति ने कहा कि हमारा विश्वविद्यालय 100 वर्ष से अधिक पुराना है और इसकी एकेडमिक गुणवत्ता पूरे देश में काफी प्रसिद्ध है। जिसको देखते हुए एक व्यापक इंपैक्ट सोसाइटी में कर पाने की स्थिति में हम हैं। उसी कड़ी में एक हिंदू अध्ययन केंद्र की स्थापना की जायेगी। इस हिंदू अध्ययन केंद्र में कई चीज होगी जिसमें एक एमए इन हिंदू स्टडीज का कोर्स शुरू करने जा रहे हैं।

कुलपति ने बताया कि एक पेपर सनातन वैदिक संस्कृति के नाम से पढ़ाया जायेगा। जैसा कि नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत आगामी वर्ष में एक वर्ष का पीजी की शुरूआत होने वाला है। इसी प्रकार 2 वर्ष के पीजी को पुन: रिस्ट्रक्चर किया जा रहा है। इसका लाभ लाइब्रेरी व अन्य संस्थानों में भी किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अभी हाल ही में हिंदू स्टडीज में नेट की परीक्षा भी शुरू कर दी है, ऐसे में हम अपने यहां पर शुरू करना चाहते हैं। उसी के तहत हम राज्य सरकार को एक हिन्दू शोध पीठ स्थापित करने के लिए प्रस्ताव भेजेंगे। इस शोध पीठ में जो भी रिसर्च एक्टिविटी होगी। इसके अंतर्गत रिसर्च स्कॉलर को जूनियर रिसर्च फैलोशिप भेज देंगे। इसके माध्यम से हमारी कोशिश है कि सनातन संस्कृति और हिंदू धर्म के ऊपर एक समग्र शोध हो सके। इस मौके पर स्वामी अभिषेक ब्रम्हचारी ने बताया कि हम लोग अखिल ब्रम्हांड की चिंता करते हैं। भारत के बच्चे मुस्लिम, ईसाई व अन्य धर्मों को भी पढ़ते हैं। हमारे वेद और विचारों से लोग प्रभावित होते हैं। जब हम लोग पुष्पक विमान की बात करते हैं तो लोग विश्वास नहीं करते लेकिन भारत ने साबित कर दिया और अब लड़ाकू विमान उसी वेद शास्त्रों पर आधारित वैज्ञानिको द्वारा बनाये जा रहे हैं।

स्नातक व परास्नातक लेवल पर सनातन वैदिक संस्कृति का पेपर होगा शुरू

कुलपति प्रोफेसर राय ने बताया कि नए एकेडमिक सेशन 2024.25 से संस्कृत डिपार्टमेंट में स्नातक और परा स्नातक लेवल पर विश्वविद्यालय सनातन वैदिक संस्कृति का एक में पेपर शुरू करने जा रहा है। इस पेपर को शुरू करने के लिए बोर्ड ऑफ स्टडीज, एकेडमिक काउंसिल आदि की प्रक्रिया को जल्द ही पूरा किया जाएगा।

विदेश में बसे प्रवासियों के बीच अंग्रेजी के बाद हिंदी ही संपर्क का साधन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग सोमवार को में प्रवासी साहित्य के आलोचक प्रसिद्ध भाषाविद् प्रोफेसर विमलेश कांति वर्मा का भारतीय गिरमिटिया समाज (भाषा, साहित्य और संस्कृत) विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रोफेसर विमलेश कांति वर्मा ने बताया कि गिरमिटिया भारतीयों को आज के प्रवासियों से जोड़कर नहीं देखना चाहिए।

उन्होने कहा कि भारतीय प्रवासियों में लगभग डेढ़ हजार वर्ष पूर्व गए रोमा जाति के लोग दूसरे यूरोपियन सत्ता के समय एग्रीमेंट के अनुकूल सोने का लालच देकर विदेशी जमीन पर ले जाए जाने वाले लोग तथा तीसरे स्वाधीनता के पश्चात विदेश में जाकर जीवनयापन से जुड़े लोग आते हैं। इसमें तीसरा वर्ग अंग्रेजियत से प्रभावित है लेकिन विदेश में बसे अनेक भाषा भाषियों के मध्य अंग्रेजी के बाद हिंदी ही संपर्क का साधन है। प्रोफेसर कांति ने प्रवासी साहित्य को एक अलग अनुशासन के रूप में रखने के लिए प्रेरित किया। साथ ही उन्होंने कहा कि प्रवासी साहित्यकारों के लेखन में चूंकि भारत में प्रचलित, परनिष्ठित साहित्य के मानक के अनुरूप स्तर नहीं दिखाई पड़ता किंतु हमें प्रवासी साहित्य का मूल्यांकन प्रवासी जन की सीमाओं में ही करना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रवासी भारतीय कहने पर हम उन सभी विदेशियों को स्मरण करते हैं। जिनके संस्कार कई पीढ़ियों के गुजरने के पश्चात भी आज भारतीय संस्कृति से जुड़े हैं। उन्होंने बताया कि गिरमिटिया जन भारत से अपनी मिट्टी और श्रीरामचरितमानस के गुटके लेकर गए थे जो उनका विदेश की धरती पर संबल बने। यदि हम विदेशों एवं गिरमिटिया देशों में हिंदी का विकास अथवा लुप्तप्राय हिंदी भाषा को पुनर्जीवित करना चाहते हैं तो हमें श्रीरामचरितमानस और लोक वार्ता को भाषिक आधार बनाना चाहिए। गिरमिटिया गीतों में हमें भारतीय संस्कृति दिखाई पड़ती है। इस अवसर पर नारी शक्ति मिशन के अंतर्गत नारी शक्ति मिशन की विश्वविद्यालय की निदेशक प्रो मधुरिमा लाल तथा पद्मश्री विद्याविन्दु सिंह ने भी अपने विचार प्रकट किये। अतिथियों का स्वागत करते हुए विभागा ध्यक्ष प्रोफेसर रश्मि कुमार ने प्रवासी साहित्य के केंद्र में संस्कृति का महत्व स्थापित किया।

बीज-वक्ता के रूप में प्रोफेसर योगेंद्र प्रताप सिंह ने गिरमिटिया का अर्थ गिरमिटिया राष्ट्रों की समस्याओं, वहां की संस्कृति को स्पष्ट किया। इस अवसर पर विभागीय शिक्षकों के अतिरिक्त शोध छात्र उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर हिमांशु सेन तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर पवन अग्रवाल ने किया।

लखनऊ विश्वविद्यालय में अंतर-छात्रावास प्रतियोगिता उत्सव 2024 आज से

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय में मंगलवार से 7 फरवरी 2024 तक एक अंतर.छात्रावास प्रतियोगिता उत्सव 2024 का आयोजन हो रहा है। जिसमें लखनऊ विश्वविद्यालय के अंतर्राष्ट्रीय छात्रावासों सहित सभी 18 छात्रावासों के अन्त:वासी लड़के और लड़कियां प्रतिभाग करेंगे।

9 दिवसीय उत्सव का उद्घाटन समारोह 30 जनवरी 2024 को हबीबुल्लाह हॉल में विवि के कुलपति प्रोफेसर आलोक कुमार राय की अध्यक्षता और मुख्य अतिथि के रूप में शामिल प्रमुख सचिव पर्यटन और संस्कृति विभाग मुकेश कुमार मेश्राम की उपस्थिति में सम्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय परिवार के सभी अधिकारीगण, शिक्षक और हॉस्टल से जुड़े सभी प्रोवोस्ट एवं सहायक प्रोवोस्ट शामिल होंगे। महात्मा गांधी की पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के बाद मशाल जलाकर उत्सव के उद्घाटन की घोषणा भी जाएगी। उद्घाटन के पश्चात पुरुष अंत:वसियों के मध्य वॉलीबॉल प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं कुलपति के कर कमलों द्वारा महमूदाबाद हॉल में किया जाएगा। खेल वर्ग के अंतर्गत बालक एवं बालिकाओं के लिए वॉलीबॉल मैच 30 जनवरी को ही कैलाश हॉल में महिला अंत:वासियों के मध्य वालीबॉल खेला जाएगा। इस प्रतियोगिता में साहित्यिक कार्यक्रमों का विषय मुख्य रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वर्णिम भारत और आध्यात्मिक आधार पर विकसित भारत 2047 आदि पर केंद्रित है। बैडमिंटन मैच बालकों के लिए 31 जनवरी को एलबीएस हॉल में तथा बालिकाओं के लिए 2 फरवरी को सीएसए हॉल में खेले जाएंगे। 1 फरवरी को क्रिकेट मैच एलयूएए ग्राउंड में आयोजित किया जाएगाए लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए शतरंजए कैरम और टेबल टेनिस जैसे इनडोर खेल लखनऊ विश्वविद्यालय के दूसरे परिसर में आयोजित किए जाएंगे, और लड़कों और लड़कियों दोनों के सभी ट्रैक इवेंट और टग ऑफ वॉर प्रतियोगिता पांच फरवरी को एलयूएए ग्राउंड में ही सम्पन्न होगी।

वॉलीबॉल और क्रिकेट के फाइनल मैच 6 फरवरी को एलयूएए मुख्य मैदान पर होंगे। 31 जनवरी से नृत्य, प्रहसन, क्विज़, जैम, वाद-विवाद, गायन, मिमिक्री, पोस्टर मेकिंग, रंगोली, मुशायरा और कविता सहित सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएंगी। उत्सव का आयोजन नई शैक्षिक नीति के निर्देशों और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।

लवि के 12 विद्यार्थियों का हुआ प्लेसमेंट

जासं, लखनऊः लखनऊ विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग में संचालित एम.बी.ए. फाइनेंस एंड अकाउंटिंग के विद्यार्थियों के लिए सोमवार को कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया गया। इसमें उज्जीवन स्माल फाइनेंस बैंक ने एग्जीक्यूटिव ट्रेनी-माइक्रो बैंकिंग पद के लिए 56 विद्यार्थियों का प्री प्लेसमेंट साक्षात्कार हुआ।

विभाग के डा. अमित मिश्रा ने बताया कि फाइनल में एम.बी.ए. फाइनेंस एंड अकाउंटिंग के 12 छात्र-छात्राओं का चयन हुआ। इसमें शुभम, सक्षम द्विवेदी, अभय कुमार गुप्ता, विवेक कुमार, स्नेहल राय, सोनाली मिश्रा, ओम प्रताप सिंह, अक्षत राय, निखिल जायसवाल, राज शेखर सिंह, आयुष सक्सेना व आकर्ष अग्रवाल शामिल हैं। चयनित विद्यार्थियों को 11.25 लाख रुपये का सालाना पैकेज मिलेगा।

JAGRAN CITY PAGE I

लखनऊ विश्वविद्यालय में खुलेगा हिंदू अध्ययन केंद्र

हिंदुइज्म स्टडीज में एम.ए. की होगी पढ़ाई
वैदिक संस्कृति का कोर्स शुरू होगा

जागरण संवाददाता, लखनऊ : सनातन धर्म की वैज्ञानिकता और पौराणिकता को विद्यार्थियों तक ले जाने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय में अगले शैक्षिणिक सत्र से हिंदू अध्ययन केंद्र की स्थापना की जाएगी। इस केंद्र के माध्यम से हिंदू धर्म, संस्कृति में वैज्ञानिक आधार को लेकर शोध होगा। साथ ही इस केंद्र से दो वर्षीय एम.ए. इन हिंदू स्टडीज भी शुरू किया जाएगा। हिंदू अध्ययन शोधपीठ स्थापित करने के लिए जल्द ही शासन को प्रस्ताव भेजा जाएगा। यह जानकारी सोमवार को कुलपति प्रो. आलोक राय ने प्रेसवार्ता में दी।

उन्होंने बताया कि हिंदू अध्ययन शोधपीठ में सनातन धर्म और संस्कृति पर शोध के

लखनऊ विश्वविद्यालय में सोमवार को कुलपति आलोक राय और आचार्य अभिषेक ब्रह्मचारी ने पत्रकारों से वार्ता की ● जागरण

लिए जेआरएफ को फेलोशिप भी दी जाएगी। इसके अलावा नए शैक्षणिक सत्र से संस्कृत और प्राच्य विभाग में सनातन वैदिक संस्कृति का पेपर भी शुरू किया जाएगा। यह पेपर स्नातक और परास्नातक में संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होगा। विद्यार्थियों की रुचि और रुझान को देखते हुए इसे आगे विस्तार दिया जाएगा। इसके पाठ्यक्रम, पेपर आदि को बोर्ड आफ स्टडीज, फैकल्टी बोर्ड और अन्य समितियों से स्वीकृत कराकर अगले सत्र से शुरू किया जाएगा। इस तरह के पाठ्यक्रम शुरू करने से युवाओं को रोजगार मिलेगा या नहीं? इसके जवाब में कुलपति ने कहा कि वैदिक संस्कृति व धर्म पढ़ने वाले विद्यार्थियों को एकेडमिक, पुस्तकालय, म्यूजियम, धार्मिक संस्थाओं में रोजगार के अवसर भी मिलेंगे। इस अवसर पर कुलपति और आचार्य अभिषेक ब्रह्मचारी ने प्राच्य संस्कृत विभाग के शिक्षक डा. श्यामलेश कुमार तिवारी का स्वागत किया, जो अयोध्या में संपन्न हुए प्राण प्रतिष्ठा आयोजन के नौ आचार्यों में से एक थे।

भारत में राम युग की शुरुआत

करपात्री महाराज के शिष्य आचार्य अभिषेक ब्रह्मचारी महाराज ने कहा कि भारत में श्रीराम युग की शुरुआत हो चुकी है। भगवान श्रीराम अपने मंदिर में विराजमान हो चुके हैं। भारत वेद शास्त्र आधारित देश है। भारत वेदों को सिद्ध कर प्रमाणित कर चुका है। वेदों की प्रामाणिकता क्या है, इसे कम समय में परिभाषित नहीं किया जा सकता है। करपात्री महाराज ने वेदों को सिद्ध किया है और उसकी प्रामाणिकता को स्थापित किया है। लखनऊ विश्वविद्यालय में इसकी शुरुआत करने पर कुलपति की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में वन अर्थ वन फैमिली पर कार्य किया जा रहा है। हमारे वेद और विचारों से लोग प्रभावित होते हैं। वेद, पुराण में जब पुष्पक विमान की बात होती थी, तो लोग विश्वास नहीं करते थे, लेकिन भारत ने साबित कर दिया। अब लड़ाकू विमान उसी वेद शास्त्रों पर आधारित होकर बनाए जा रहे हैं।

DAINIK JAGRAN PAGE 4

लखनऊ विश्वविद्यालय में धूप का आनंद लेते छात्र-छात्राएं ● जागरण

SWATANTRA BHARAT PAGE 2

गिरमिटिया गीतों में दिखाई पड़ती है भारतीय संस्कृति की झलक : प्रो. विमलेश

स्वतंत्र भारत संवाददाता,लखनऊ। हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय में प्रवासी साहित्य के आलोचक, प्रसिद्ध भाषाविद प्रो.विमलेश कांति वर्मा का भारतीय गिरमिटिया समाज (भाषा, साहित्य और संस्कृत) विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रो.विमलेश कांति वर्मा ने बताया कि गिरमिटिया भारतीयों को आज के प्रवासियों से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। भारतीय प्रवासियों में लगभग डेढ़ हजार वर्ष पूर्व गए रोमा जाति के लोग दूसरे यूरोपियन सत्ता के समय एग्रीमेंट के अनुकूल सोने का लालच देकर विदेशी जमीन पर ले जाए जाने वाले लोग तथा तीसरे स्वाधीनता के पश्चात विदेश में जाकर जीवनयापन से जुड़े लोग आते हैं। इसमें तीसरा वर्ग अंग्रेजियत से प्रभावित है लेकिन विदेश में बसे अनेक भाषा-भाषियों के मध्य अंग्रेजी के बाद हिंदी ही संपर्क का साधन है। प्रो.कांति ने प्रवासी साहित्य को एक अलग अनुशासन के रूप में रखने के लिए प्रेरित किया। साथ ही उन्होंने कहा कि प्रवासी साहित्यकारों के लेखन में चूंकि भारत में प्रचलित, परनिष्ठित साहित्य के मानक के अनुरूप स्तर नहीं दिखाई पड़ता किंतु हमें प्रवासी साहित्य का मूल्यांकन प्रवासी जन की सीमाओं में ही करना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि प्रवासी भारतीय कहने पर हम उन सभी विदेशियों को स्मरण करते हैं जिनके संस्कार कई पीढ़ियों के गुजरने के पश्चात भी आज भारतीय संस्कृति से जुड़े हैं। उन्होंने बताया कि गिरमिटिया जन भारत से अपनी मिट्टी और श्रीरामचरितमानस के गुटके लेकर गए थे जो उनका विदेश की धरती पर संबल बने। यदि हम विदेशों एवं गिरमिटिया देशों में हिंदी का विकास अथवा लुप्तप्राय हिंदी भाषा को पुनर्जीवित करना चाहते हैं तो हमें श्रीरामचरितमानस और लोकवार्ता को भाषिक आधार बनाना चाहिए। गिरमिटिया गीतों में हमें भारतीय संस्कृति दिखाई पड़ती है। इस अवसर पर नारी शक्ति मिशन के अंतर्गत नारी शक्ति मिशन, विश्वविद्यालय की निदेशक प्रो.मधुरिमा लाल तथा पद्मश्री विद्याविन्दु सिंह ने भी अपने विचार प्रकट किये। अतिथियों का स्वागत करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो.रश्मि कुमार ने प्रवासी साहित्य के केंद्र में संस्कृति का महत्व स्थापित किया। वक्ता प्रो.योगेंद्र प्रताप सिंह ने गिरमिटिया का अर्थ, गिरमिटिया राष्ट्रों की समस्याओं, वहां की संस्कृति को स्पष्ट किया। इस अवसर पर विभागीय शिक्षकों के अतिरिक्त शोध छात्र उपस्थित रहे साथ ही डॉ.सुनंदा की विशेष उपस्थिति रही। जिन्होंने स्वयं प्रवासी साहित्य और साहित्यकारों पर शोध कार्य किया है। कार्यक्रम का संचालन प्रो.हिमांशु सेन तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो.पवन अग्रवाल ने किया।

लविवि स्थापित करेगा हिन्दू अध्ययन केन्द्र

भारत वेदों को सिद्ध करके प्रमाणित कर चुका है : आचार्य अभिषेक

स्वतंत्र भारत संवाददाता,लखनऊ। विश्वविद्यालय में धर्म सम्राट करपात्री महाराज के शिष्य आचार्य अभिषेक ब्रम्हचारी महाराज का आगमन हुआ। अभिषेक महाराज का अभिनंदन व स्वागत मंत्रोच्चार द्वारा किया गया। इसी समय कुलपति एवं अभिषेक ब्रम्हचारी ने प्राच्य संस्कृत विभाग के शिक्षक डा.श्यामलेश कुमार तिवारी को फूलों की माला पहनाकर स्वागत व अभिनन्दन किया। श्यामलेश विगत दिनों अयोध्या में संपन्न हुए प्राण प्रतिष्ठा आयोजन के 9 आचार्यों में से एक थे। कुलपति ने बताया कि स्वामी जी महाराज का प्रस्ताव था कि लविवि में जिस प्रकार से अन्य धर्मों के सम्बन्ध में अध्ययन कराया जाता है उसी प्रकार से विवि में एक हिन्दू अध्ययन केन्द्र की भी स्थापना की जाये, जिसकी पूर्ति के लिए विवि स्तर पर काफी दिनों से प्रयास किये जा रहे हैं और विवि प्रस्ताव की पूर्ति के लिए अब लगभग तैयार हो चुका है। आचार्य अभिषेक महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत वर्ष में श्रीराम युग की शुरूआत हो चुकी है और भगवान श्रीराम मंदिर में विराजमान हो चुके हैं। भारत वेद शास्त्र आधारित देश है। पहले लोग भारत को गड़रियों का देश कहा करते थे। वेदों को प्रमाणित करने का प्रयास किया जाता था किन्तु आज भारत वेदों को सिद्ध करके प्रमाणित कर चुका है। वेदों की प्रमाणिकता क्या है इसे कम समय में नहीं परिभाषित किया जा सकता है। करपात्री जी महाराज ने वेदों को सिद्ध किया है तथा उसकी प्रमाणिकता को स्थापित किया है। महाराज जी ने बताया कि मैंने इस संबंध में लविवि के कुलपति से अनुरोध किया कि वे एक शोध पीठ की भी स्थापना करने का प्रयास करें,जिसे पाठ्यक्रम में भी शामिल करें। मैं इनको कार्य के सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ। भारत में इस पर कार्य किया जा रहा है। हम लोग अखिल ब्रह्मांड की चिंता करते हैं। भारत के बच्चे मुस्लिम, ईसाई व अन्य धर्मों को भी पढ़ते हैं। हमारे वेद और विचारों से लोग प्रभावित होते हैं। जब हम लोग पुष्पक विमान की बात करते हैं तो लोग विश्वास नहीं करते लेकिन भारत ने साबित कर दिया और अब लड़ाकू विमान उसी वेद शास्त्रों पर आधारित वैज्ञानिकों द्वारा बनाये जा रहे हैं। अन्त में महाराज जी ने कहा कि कुलपति आलोक राय को बहुत शुभकामनाएं। आगे कुलपति ने कहा कि स्वामी अभिषेक महाराज ने जो वेद शास्त्र आधारित अध्ययन केन्द्र स्थापित कर उन्हें विवि में अध्ययन के लिए लागू करने की बात कही थी उसे लागू किया जा रहा है। लविवि में संस्कृत विभाग एवं प्राच्य संस्कृत विभाग में पहले से संबंधित विषय लागू हैं, जिसे अब अनिवार्य रूप से लागू किया जायेगा। लविवि हिन्दू अध्ययन केन्द्र स्थापित करने जा रहा है,जिसके तहत हिन्दू इन अध्ययन

एवं एक शोध पीठ को भी स्थापित करने का प्रस्ताव शासन को देने जा रहे हैं, जिसका ठोस प्रस्ताव तैयार किया जा रहा है। इसके अध्ययन के लिए अगले सत्र से कई तैयारी है। जिसमें एमए इन हिन्दू अध्ययन (दो वर्ष),हिन्दू अध्ययन शोध पीठ और हिन्दू अध्ययन में रिसर्च को विस्तार देना। इस सम्बन्ध में सभी कार्रवाई जैसे सिलेबस, पेपर आदि को बोर्ड ऑफ स्टाडिज, फैकल्टी बोर्ड व अन्य समितियों से पास कराकर अगले सत्र से शुरूआत करेंगे। कुलपति ने बताया कि एक पेपर सनातन वैदिक संस्कृति के नाम से पढ़ाया जायेगा। जैसा कि नई शिक्षा नीति के तहत आगामी वर्ष में एक वर्ष का पीजी की शुरूआत होने वाला है। इसी प्रकार 02 वर्ष के पीजी को पुनःरिस्ट्रक्चर किया जा रहा है। इसका लाभ लाइब्रेरी व अन्य संस्थानों में भी किया जा सकेगा।

एलयू में 7 फरवरी तक होंगी विभिन्न प्रतियोगिताएं

स्वतंत्र भारत संवाददाता,लखनऊ। लविवि 30 जनवरी से 7 फरवरी तक

अंतर-छात्रावास प्रतियोगिता उत्सव का उद्घाटन समारोह आज

एक अंतर-छात्रावास प्रतियोगिता उत्सव 2024 का आयोजन कर रहा है। जिसमें विवि के अंतर्राष्ट्रीय छात्रावासों सहित सभी 18 छात्रावासों के अन्तःवासी लड़के-लड़कियां प्रतिभाग करेंगे। इस 09 दिवसीय उत्सव का उद्घाटन समारोह मंगलवार को हबीबुल्लाह हॉल में होगा, जो कुलपति प्रो.आलोक कुमार राय की अध्यक्षता और मुख्य अतिथि मुकेश कुमार मेश्राम, प्रमुख सचिव, पर्यटन और संस्कृति विभाग,उत्तर प्रदेश

सरकार की मौजूदगी में सम्पन्न होगा। इसके अलावा लविवि परिवार के सभी अधिकारी, शिक्षक और हॉस्टल से जुड़े सभी प्रोवोस्ट एवं सहायक प्रोवोस्ट शामिल होंगे। महात्मा गांधी की पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के बाद मशाल जलाकर उत्सव के उद्घाटन की घोषणा होगी। उद्घाटन के पश्चात पुरुष अंतःवसियों के मध्य वॉलीबॉल प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि एवं कुलपति द्वारा महमूदाबाद हॉल में किया जाएगा। खेल वर्ग के तहत बालक-बालिकाओं के लिए वॉलीबॉल मैच आज ही कैलाश हॉल में महिला अंतःवासियों के मध्य खेला जाएगा। इस प्रतियोगिता में साहित्यिक कार्यक्रमों का विषय मुख्य रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वर्णिम भारत और आध्यात्मिक आधार पर विकसित भारत 2047 आदि पर केंद्रित है। बैडमिंटन मैच बालकों के लिए 31 जनवरी को एलबीएस हॉल में तथा बालिकाओं के लिए 2 फरवरी को सीएसए हॉल में खेले जाएंगे। वहीं,1 फरवरी को क्रिकेट मैच एलयूएए ग्राउंड में आयोजित किया जाएगा। लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए शतरंज,कैरम और टेबल टेनिस जैसे इनडोर खेल लखनऊ विश्वविद्यालय के दूसरे परिसर में आयोजित किए जाएंगे, और लड़कों और लड़कियों दोनों के सभी ट्रैक इवेंट और टग ऑफ वॉर प्रतियोगिता पांच फरवरी को एलयूएए ग्राउंड में ही सम्पन्न होगी। वॉलीबॉल और क्रिकेट के फाइनल मैच 6 फरवरी को एलयूएए मुख्य मैदान पर होंगे। 31 जनवरी से नृत्य, प्रहसन, क्विज़, जैम, वाद-विवाद, गायन, मिमिक्री, पोस्टर मेकिंग, रंगोली, मुशायरा और कविता सहित सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएंगी। उत्सव का आयोजन नई शैक्षिक नीति के निर्देशों और उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है, जबकि क्विज़ प्रतियोगिता स्वर्णिम भारत की परंपरा और प्रगति पर आधारित है। इन सभी आयोजनों के अलावा 4 फरवरी को सीएसए हॉल में लड़के और लड़कियों दोनों के लिए एक कुकिंग प्रतियोगिता होगी, जिसमें आयोजन समितियों द्वारा लड़कों की अच्छी भागीदारी देखी जा सकती है। फेस्ट का उद्देश्य प्रत्येक अन्तःवासी को भाग लेने और बड़े उत्साह के साथ अपनी पूरी क्षमता दिखाने का अवसर प्रदान करना है। शोध छात्र-छात्राओं के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय छात्रों सहित लगभग सभी छात्र इन आयोजनों का हिस्सा हैं। माननीय कुलपति प्रो आलोक कुमार राय के संरक्षण एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो.संगीता साहू और मुख्य प्रोवोस्ट प्रो.अनूप कुमार सिंह के नेतृत्व में छात्रावास की पूरी टीम ने सभी खेल,सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों को मूर्त दिया है। कल के उद्घाटन समारोह के रिहर्सल के लिए सभी छात्रावासों के चयनित अंतःवासी एवं प्रोवोस्ट तथा सहायक प्रोवोस्ट हबीबुल्ला हॉल में उपस्थित थे।

TOI PAGE 3

LU to introduce PG in Hindu studies

From New Academic Session

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: Lucknow University will offer MA in Hindu studies in which students will be taught Vedas and 'Sanatan dharma' from the academic session 2024-25. Also, Sanatan Vedic culture will be taught as a mandatory paper at the undergraduate and postgraduate levels in Sanskrit. LU also plans to establish an autonomous centre for research on the subject and a proposal for the same will be sent to the state government soon.

The announcement of introducing such subjects was made by the vice-chancellor Prof Alok Kumar Rai and Acharya Abhishek Brahmachari Ji Maharaj, the disciple of Samrat Karpatri Maharaj, founder of Akhil Bharatiya Ram Rajya Parishad who visited the campus on Monday.

LU finalising proposal

"The university plans to establish a centre for Hindu Studies and offer an MA course in the same in the Sanskrit department. We are going to propose to the government to establish a research chair in Hinduism Studies. A proposal in this regard is being prepared," said Prof Rai.

He said the university will get the syllabus passed by the board of studies, faculty board and other committees soon.

"Swami Ji Maharaj suggested that like students study different religions in their curriculum they should also be taught about Hindu studies. So, we have decided to offer MA course in the subject," said the VC.

Acharya Abhishek Brahmachari Ji Maharaj said, "I had requested the VC to establish a research chair and teach students about Vedas and let the world know about our Vedas, Hindu traditions and Sanatan Dharma. People are influenced by our Vedas and thoughts. Our Vedas talked about Pushpak Viman, people don't believe but India has proved it and now fighter planes are being made by scientists based on the same Veda Shastras."